

# यदुनाथ झा 'यदुवर' पर वेबिनार का आयोजन

- साहित्यकारों ने वेबिनार में यदुवर की कृतियों पर की चर्चा
- साहित्य अकादमी द्वारा कार्यक्रम आयोजित



वेबिनार में भाग लेते मैथिली साहित्यकार.

उन्होंने कहा कि यदुवर राष्ट्रीय चेतना के साहित्यकार थे. वेबिनार के उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष डा. रमानंद झा 'रमण' ने यदुवर के संबंध में विचार रखते हुए उन्हें एक कुशल अनुसंधानकर्ता बताया. आलेख-सत्र में नारायण झा, शंकर मधुपांश, दिलीप कुमार झा ने अपने आलेख का पाठ किया. आलेख पाठ सत्र के अंत में डा. कमल मोहन चुन्नु ने सभी को धन्यवाद दिया.

## कवि यदुनाथ झा 'यदुवर' पर सेमिनार का आयोजन

**मधेपुर.** साहित्य अकादमी नई दिल्ली के द्वारा मैथिली साहित्य के 20 वीं सदी के पहले दशक से काव्य लिखने वाले कवि यदुनाथ झा यदुवर विषय पर ऑनलाईन सेमिनार का आयोजन किया गया. इस

सेमिनार में मैथिली साहित्य के कई विद्वान शामिल हुए. सेमिनार में रहुआ संग्राम गांव निवासी साहित्यकार व मैथिली भाषा में साहित्य अकादमी द्वारा युवा पुरस्कार से पुरस्कृत शिक्षक नारायण झा, डॉ अशोक कुमार झा अविचल भी शामिल होकर यदुनाथ झा यदुवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से चर्चा की. कहा कि कवि यदुनाथ झा यदुवर का जन्म 1888 ई. में मधेपुरा जिले के मुरही गांव में हुआ था. उनका निधन 1935 ई. में ही गया.

साहित्य अकादमी नई दिल्ली के उप सचिव सुरेश बाबू ने सेमिनार का उद्घाटन कर यदुनाथ यदुवर के जीवन पर प्रकाश डाला. साहित्य अकादमी के मैथिली भाषा के परामर्शदातृ समिति के संयोजक डा.अशोक कुमार झा अविचल

ने विषय प्रवेश करते हुए यदुवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला तथा कहा कि इस कार्यक्रम में जो अभिलेख प्राप्त होगा, उसे साहित्य अकादमी प्रकाशित भी करेगी. डा. ललितेश मिश्र ने बीज भाषण में यदुवर के संबंध राष्ट्रीय चेतना सहित कई महत्वपूर्ण बातें कही.

दूसरे आलेख सत्र में बतौर अध्यक्ष डा. कमल मोहन, चुन्नु, आलेख पाठकर्ता साहित्यकार नारायण झा, शंकर मधुपांश, दिलीप कुमार झा ने आलेख पाठ किया. नारायण झा ने यदुवर के देशभक्ति, भावयुक्त कविता के संबंध में कहा कि यदुवर अपने मातृभूमि, मातृभाषा, और देश-दुर्दशा को केन्द्र में रखकर अनेकों कविता लिखकर काव्यधारा को बदलने का काम किया है. शंकर मधुपांश ने कहा कि यदुवर में भाषा प्रेम का भाव पृथक ही झलकता है. जो अभी भी परखने योग्य है. दिलीप कुमार झा ने कहा कि यदुवंश के सृजन का समय वह है. जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए आवाजें उठनी शुरू हुई थी. मैथिली भाषा में उन्होंने भी देश के लिए आवाज उठाकर दिशा देने का काम किया. उपसचिव सुरेश एवं अशोक कुमार झा अविचल ने धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम के समापन की घोषणा की.

**झंझारपुर.** मैथिली के प्रसिद्ध साहित्यकार यदुनाथ झा 'यदुवर' पर साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन किया गया. इसमें साहित्यकारों ने भाग लेकर यदुवर के की साहित्यिक कृतियों पर विस्तार से चर्चा की. वक्ताओं ने कहा कि यदुनाथ झा 'यदुवर' मुरही (मधेपुरा) जिला के निवासी थे. उनका जन्म 1888 ई. व मृत्यु 1935 ई. में हुआ था. उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी नई दिल्ली के उप सचिव डॉ. एन सुरेश बाबू ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कवि यदुवर के काव्य महत्त्व को रेखांकित किया. अकादमी के मैथिली भाषा के परामर्शदातृ समिति के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने विषय प्रवेश करके यदुवर की साहित्यिक कृतियों के संबंध में विस्तार से चर्चा की. वेबिनार में बीज भाषण डॉ ललितेश मिश्र ने किया.

# साहित्य अकादमी ने यदुनाथ झा 'यदुवर' पर ऑनलाइन सेमिनार का किया आयोजन

## साहित्यकार और विद्वानों ने वेबिनार में भाग लेकर यदुवर के संबंध में की चर्चा

विकाश झा/झंझारपुर

जन अखबार: मैथिली साहित्य के बीसवीं शताब्दी के पहले-दूसरे दशक से सक्रिय रहने वाले अनुसन्धाता, देशभक्ति मूलक काव्य लिखने वाले यदुनाथ झा 'यदुवर' विषय पर साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा विगत 28 मई को ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें साहित्यकार और विद्वानों ने भाग लेकर यदुवर के सम्बन्ध में चर्चा की। वक्ताओं ने कहा कि यदुनाथ झा 'यदुवर' मुर्हो (मधेपुरा) जिला के निवासी थे जिनका जन्म 1888 ई. एवं मृत्यु 1935 ई. में हुआ था। आयोजन के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के उप सचिव डॉ एन सुरेश बाबू ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कवि यदुवर के काव्य महत्त्व को पृष्ठांकित किया। अकादेमी के मैथिली भाषा के परामर्शदाता समिति के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने विषय प्रवर्तन कर यदुवर के सम्बन्ध पर चर्चा करते हुए कतिपय विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में जो आलेख प्राप्त



### वेबिनार में भाग लेते मैथिली साहित्यकार

09:12

होगा उसे साहित्य अकादेमी प्रकाशित भी करेगी जो मैथिली साहित्य के लिए एक विशिष्ट कार्य होगा। वेबिनार के बीज भाषण कर्ता डा.ललितेश मिश्र ने यदुवर के सम्बन्ध राष्ट्रीय चेतना और अनेको नये-

नये विषय के सम्बन्ध में अपनी महत्त्वपूर्ण बातें रखी। वेबिनार के उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष डा.रमानन्द झा 'रमण' ने यदुवर के सम्बन्ध में गम्भीरतापूर्वक विचार रखते हुए उनके अनुसन्धानात्मक प्रवृत्ति के लिए

महत्वांकित कर विषय को विस्तार दिया। आलेख-सत्र में नारायण झा, शंकर मधुपांश, दिलीप कुमार झा ने आलेख पाठकर्ता के रूप में भाग लिए।

आलेख पाठ करते हुए नारायण झा ने

यदुवर के देशभक्ति भावयुक्त कविता के सम्बन्ध में कहा कि यदुवर अपने मातृभूमि, मातृभाषा और देश-दुर्दशा को केन्द्र में रखकर अनेको कविता लिखकर काव्यधारा को बदलने का काम किया है। वहीं शंकर मधुपांश ने कहा कि यदुवर में भाषा प्रेम का भाव पृथक ही झलकता दिखाई देता है। दिलीप कुमार झा ने यदुवर के सम्बन्ध में विचार करते कहा कि यदुवर के सृजन का समय वह है जब भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के लिए आवाजें उठनी शुरू हुई थी। मैथिली भाषा में इन्होंने भी देश के लिए आवाज उठाकर दिशा देने का काम किया।

आलेख पाठ सत्र के अन्त में अध्यक्षीय भाषण देते हुए डा.कमल मोहन चुन्नु ने सभी आलेख पाठकर्ता को धन्यवाद दिया। साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के उप सचिव सुरेश बाबू और मैथिली विषय के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने वेबिनार में भाग लेने वाले सभी साहित्यकारों का धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

## स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यदुनाथ झा यदुवर ने मैथिली भाषा में की थी क्रांतिकारी रचनाएं

मधेपुरा। मैथिली साहित्य के बीसवीं शताब्दी के पहले दशक से देशभक्ति आधारित काव्य लिखने वाले यदुनाथ झा यदुवर विषय पर साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा शुक्रवार को ऑनलाइन सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें मैथिली भाषा के विख्यात कवि स्थानीय रहूआ संग्राम गांव निवासी शिक्षक नारायण झा ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सेमिनार में साहित्यकारों और विद्वानों ने ऑनलाइन भाग लेकर यदुनाथ झा यदुवर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा की। यदुनाथ झा यदुवर का जन्म 1888 ई. में मधेपुरा जिले के मुरहो गांव में हुआ था और उनका निधन 1935 ई. में हो गया। सेमिनार के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के उप सचिव सुरेश प्रसाद ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादमी के मैथिली भाषा के परामर्शदाता समिति के संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने यदुवर से संबंधित अनेकों विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. ललितेश मिश्र ने उनसे संबंधित राष्ट्रीय चेतना से जुड़ी बातें रखीं। डॉ. रमानन्द झा रमण ने उनके अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति से जुड़ी रचनाओं पर चर्चा की।

# यदुवर के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला

मधेपुर | निज संवाददाता

साहित्य अकादमी नई दिल्ली के तत्वावधान में मैथिली साहित्य के मूर्धन्य कवि यदुनाथ झा यदुवर विषय पर वेबिनार के जरिये परिसंवाद का आयोजन हुआ जिसमें मैथिली साहित्य के विद्वानों ने भाग लेकर यदुवर के सम्बन्ध चर्चाएं की जिसमें मधेपुर प्रखंड क्षेत्र के रहूआ-संग्राम गांव निवासी साहित्यकार सह मैथिली भाषा मे साहित्य अकादमी द्वारा युवा पुरस्कार से पुरस्कृत नारायण झा तथा प्रसिद्ध विद्वान डॉ अशोक कुमार झा अविचल ने शिरकत किया। मालूम हो कि यदुनाथ झा यदुवर मधेपुरा जिला के मुरहो गांव के निवासी थे। इनका

## वेबिनार

- साहित्य अकादमी नई दिल्ली के तत्वावधान में हुआ वेबिनार
- मैथिली साहित्य के विद्वानों ने परिसंवाद में की शिरकत

जन्म 1888 ई. एवं मृत्यु 1935 ई. में हुई थी। इस आयोजन के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के उप सचिव एन. सुरेश बाबू ने स्वागत वक्तव्य देते यदुवर के मैथिली साहित्य में अवदान पर चर्चा किया। साहित्य अकादमी के मैथिली भाषा के परामर्शदातृ समिति के संयोजक डॉ अशोक कुमार झा अविचल ने विषय

प्रवेश कराते हुए यदुवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। डॉ अविचल ने कहा कि इस कार्यक्रम में जो आलेख प्राप्त होगा उसे साहित्य अकादमी प्रकाशित भी करेगी। जो मैथिली साहित्य के लिए एक विशिष्ट कार्य होगा। बीज भाषणकर्ता डॉ ललितेश मिश्र ने साहित्यकार यदुवर के संबंध में राष्ट्रीय चेतना और अनेको नये-नये विषय के सम्बन्ध में अपनी महत्वपूर्ण बातें रखी। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष डॉ रमानन्द झा हारमणह ने यदुवर के सम्बन्ध में गम्भीरतापूर्वक विचार रखकर उनके अनुसन्धानात्मक प्रवृत्ति के लिए महत्वांकित कर विषय को विस्तार दिये। दूसरे आलेख सत्र की

अध्यक्षता डॉ कमल मोहन ह्यचुन्नुह, ने किया। जबकि आलेख पाठ साहित्यकार नारायण झा, शंकर मधुपांश, दिलीप कुमार झा ने किया। आलेख पाठ करते हुए नारायण झा ने यदुवर के देशभक्ति भावयुक्त कविता के सम्बन्ध कहा कि ह्यदुवर अपने मातृभूमि, मातृभाषा और देश-दुर्दशा को केन्द्र में रखकर अनेको कविता लिखकर काव्यधारा को बदलने का काम किया है। आज जो साहित्य का रूप दिखाई दे रहा है जिसमें ऐसे ही महापुरुषों का योगदान है।

वहीं शंकर मधुपांश ने कहा कि यदुवर की रचनाओं में भाषाप्रेम का भाव पृथक ही झलकता दिखाई देता है।